राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

परिवहन तथा संचार : – हम अपने प्रतिदिन के जीवन में विभिन्न सामग्रियों एवं सेवाओं का प्रयोग करते हैं। जिसमें कुछ हमारे पास होती हैं। और कुछ हम दूसरे स्थानों से लाकर पूरी करते हैं। उन्हें मंगाने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें परिवहन के साधन कहते हैं। धरातलीय बनावट के आधार पर वस्तुओं व सेवाओं को लाने ले जाने के साधन अलग–अलग हैं। इसे हम निम्न आधार से वर्गीकृत कर सकते हैं।

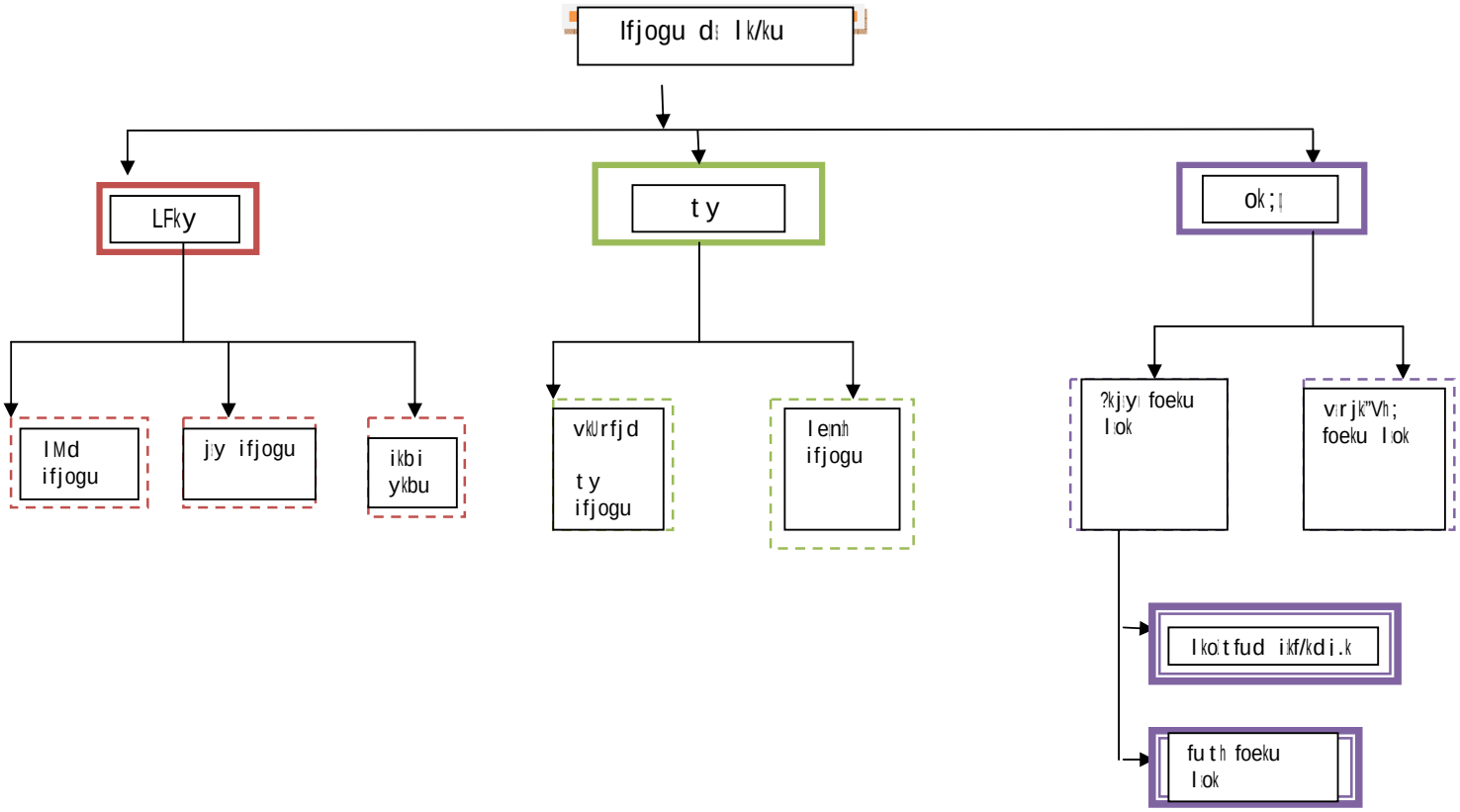

स्थल परिवहन :– भारत की धरातलीय बनावट के कारण भारत विष्व के सबसे अधिक सडक जाल वाले देषों में मुख्य है। क्यों कि यह ऐसा साधन है,जो मैदान से लेकर ऊॅचे–2 पहाडों तक भी पहुॅचाया जा सकता है,और घर –2 सेवायें उपलब्ध कराता है। साथ ही अन्य परिवहन को जोडने का कार्य करता है।

भारत में सडकों की क्षमता के आधार पर इन्हें आठ भागों में बॉटा जाता है।

1– स्वर्णिम चतुर्भुज महा राजमार्ग

2– राश्ट्रीय राजमार्ग

3– राज्य राजमार्ग

4– जिला मार्ग

5– सीमांत सडकें

6– अन्य सडकें

7– रेल परिवहन

8– पाइपलाइन

1– स्वर्णिम चतुर्भुज महा राजमार्ग :– भारत सरकार ने दिल्ली–कोलकत्ता, चेन्नई–मुंबई व दिल्ली को जोडने वाली 6 लेन वाली राजमार्गो की परियोजना प्रारंभ की है। इस परियोजना के दो गलियारे हैं।

स्वर्णिम चतुर्भुज महा राजमार्ग

उत्तर–दक्षिण और पूर्व–पष्चिम गलियारा

1– उत्तर–दक्षिण गलियारा –– जो श्रीनगर को कन्याकुमारी से जोडता है।

2–पूर्व–पष्चिम गलियारा –– जो सिलचर (असम) को पोरबंदर (गुजरात) से जोडता है।

यह राजमार्ग परियोजना भारत के राश्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (छभ।ए) के अधिकार में है।

स्वर्णिम चतुर्भुज महा राजमार्ग के बन जाने से मेगासिटी के मध्य की दूरी व समय कम लगेगा।

2– राश्ट्रीय राजमार्ग :– राश्ट्रीय राजमार्ग देष के दूरस्थ भागों को जोडते हैं। इसका निर्माण व रखरखाव केंदीय लोक निर्माण विभाग (ब्ॅव्) करती है। दिल्ली व अमृतसर के मध्य ऐतिहासिक षेरषाह सूरी मार्ग राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या – 1 के नाम से जानी जाती है।

3– राज्य राजमार्ग :– राज्यों की राजधानियों को मुख्यालयों से जोडने वाली सडकें राज्य राजमार्ग कहलाती हैं। इनके निर्माण व व्यवस्था का दायित्व सार्वजनिक निर्माण विभाग (च्ॅव्) का होता है।

4– जिला मार्ग :– ये सडकें जिले के विभिन्न प्रषासनिक केंद्रों को जिला मुख्यालय से जोडती हैं। इन सडकों की व्यवस्था का दायित्व जिला परिशद का है।

5– सीमांत सडकें:– सीमांत सडकों के निर्माण व व्यवस्था का दायित्व भारत सरकार प्राधिकरण के अधीन सीमा सडक संगठन का है। यह संगठन 1960 में बनाया गया। इन सडको के विकास से दुर्गम क्षेत्रों में पहुॅच व आर्थिक विकास पहुॅचाना है।

6– अन्य सडकें :– इस वर्ग के अंतर्गत वे सडकें आती हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों तथा गॉवों को षहरों से जोडती है।

7– रेल परिवहन :– रेल परिवहन भारत में यात्रियों व वस्तुओं के परिवहन में मुख्य साधन है। भारतीय रेलवे देष की अर्थव्यवस्था, उद्योगों, कृशि के विकास के लिएं उत्तरदायी है। देष की पहली रेलगाडी सन् 1853 में मुंबई और थाणे के मध्य चलाई गई जो 34 किमी की दूरी तय करती थी।

भारत रेलवे मार्ग ––

क्र0स0	रेल लाइन	चौडाई गेज मीटर में
01	बडी लाइन	1.676 गेज मीटर
02	मीटर लाइन	1.000 गेज मीटर
03	छोटी लाइन	0.762 और 0.610 गेज मीटर

भारतीय रेल परिवहन को 16 रेल प्रखंडों में संकलित किया गया है।

8– पाइपलाइन :– भारत में पाइपलाइन एक नया परिवहन है। पाइपलाइनों का प्रयोग कच्चे तेल, पेट्रोल उत्पाद,प्राकृतिक गैस को उर्वरक कारखानों व ताप विद्युत गृहों तक पहुँचाने में किया जा रहा है। पाइपलाइन बिछाने में लागत अधिक लेकिन इसको चलाने की लागत न्यूनतम है।

भारत में पाइपलाइन परिवहन के तीन प्रमुख जाल हैं–

1– असम के तेल क्षेत्रों से गुवाहाटी,बरौनी व इलाहाबाद के रास्ते कानपुर (उत्तर प्रदेष) तक।

2– गुजरात में सलाया से वीरमगॉव,मथुरा दिल्ली व सोनीपत के रास्ते पंजाब में जालंधर तक।

3– गुजरात में हजीरा को उत्तर प्रदेष में जगदीषपुर से मिलाती है। यह मध्य प्रदेष के विजयपुर के रास्ते होकर जाती है।

इसको (भ्टश्र) के नाम से जाना जाता है।

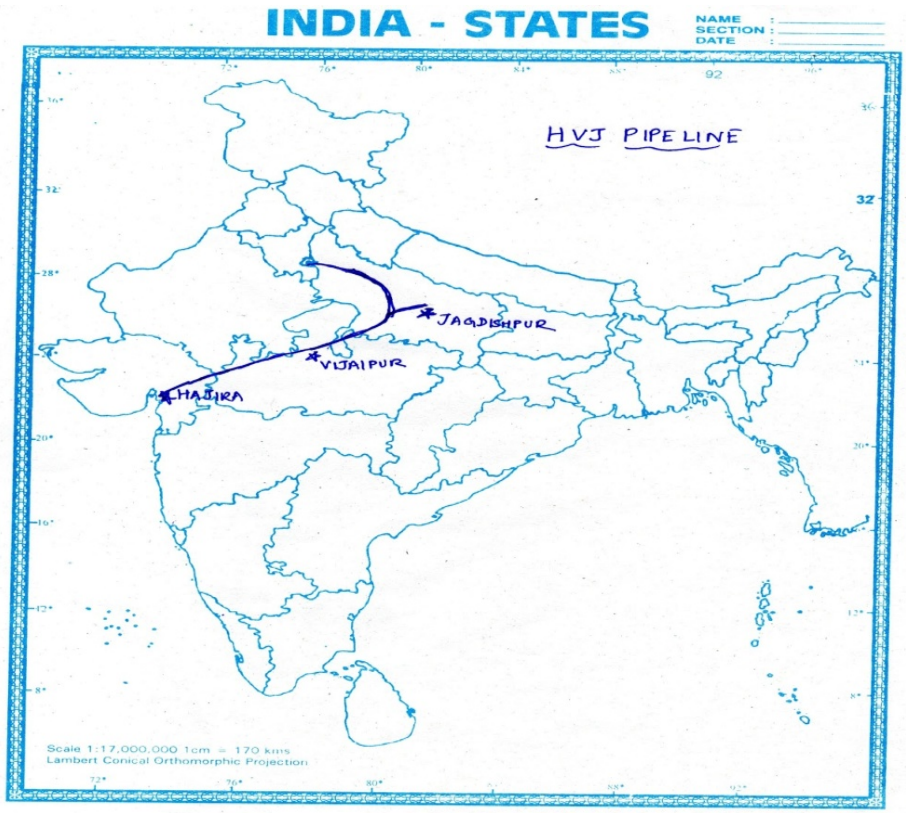

भ्टश्र पाइप लाइन

जल परिवहन –– जल परिवहन, परिवहन का सबसे सस्ता साधन है। यह भारी व स्थूलकाय वस्तुओं को ढोने में सक्षम है। भारत में जलमार्ग 14500 किमी लंबा है। इसमें केवल 3700 किमी मार्ग ही मषीनीकृत है। निम्न जलमार्ग भारत सरकार ने राश्ट्रीय जलमार्ग घोशित किये हैं।

श्रीमती पुश्पा जोषी एल0टी0 सामाजिक विज्ञान बी0एल0एस0रा0बा0इ0का0ऐंचोली,पिथौरागढ

1– हल्दिया तथा इलाहाबाद के मध्य गंगा जलमार्ग जो 1620 किमी लंबा है।

2– केरल में पष्चिम–तटीय नहर।

3– सदिया व धुबरी के मध्य 891 किमी लंबा ब्रह्मपुत्र नदी जलमार्ग।

भारत के प्रमुख समुद्री पतन –– भारत की 7516.6 किमी लंबी समुद्री तट रेखा में 12 प्रमुख तथा 181 छोटे पतन हैं। जिसे निम्न मानचित्र में दर्षाया गया है।

भारत के प्रमुख समुद्री पतन

वायु परिवहन – वायु परिवहन तीव्र,आरामदायक, व प्रतिश्ठित परिवहन का साधन है। इसके द्वारा दुर्गम स्थानों को सुगमता से पार किया जा सकता है।

भारत के अंतराश्ट्रीय हवाई पतनों की संख्या 12 हैं। जो निम्न हैं–––

1– इंदिरा गॉधी अंतराश्ट्रीय हवाई पतन

2– अमृतसर में राजा सांसी

3– मुंबई में छत्रपति षिवाजी

4– त्रिरुवनंतपुरम में नेदिबाचेरी

5– चेन्नई में मीनाम्बकम

6– हैदराबाद

7– सुभाशचन्द्र बोस

8– गुवाहाटी

9– कोचीन

10– बैंगलुरु

11– अहमदाबाद

12– पणजी

सन् 1953 में वायु परिवहन का राश्ट्रीयकरण किया गया । भारत के अंतराश्ट्रीय हवाई पतन निम्न मानचित्र में दर्षाया गया है।

भारत के अंतराश्ट्रीय हवाई पतन

संचार सेवाऐं –– संदेष लाने व ले जाने के साधनों को संचार के साधन कहते हैं। संदेष प्राप्तकर्ता या संदेष भेजने वाले के गतिविहीन रहते हुए भी लंबी दूरी का संचार बहुत आसान है। संचार सेवाऐं दो प्रकार की होती हैं।

1– निजी दूर संचार ––– जैसे – पार्सल, निजीपत्र,मोबाइल फोन आदि।

2– जनसंचार ––––––– जैसे – दूरसंचार, रेडियो, समाचार पत्र,प्रेस, पत्रिकाऐं तथा सिनेमा आदि।

बडे षहरों व नगरों में डाक संचार में षीघ्रता हेतु छः मार्ग बनाये गये हैं। इन्हें राजधानी मार्ग, मेट्रो चैनल, ग्रीन चैनल, व्यापार चैनल,भारी चैनल तथा दस्तावेज चैनल के नाम से जाना जाता है। भारत में लगभग 37.565 दूरभाश केन्द्र हैं जो संपूण भारत में फैले हैं।

भारत में वर्श भर अनेक समाचार पत्र तथा सामयिक पत्रिकाऐं प्रकाषित की जाती हैं। समाचार पत्र 100 भाशाओं में तथा बोलियों में प्रकाषित होते हैं। सर्वाधिक समाचार पत्र हिंदी भाशा में प्रकाषित होते हैं। भारत विष्व में सर्वाधिक चलचित्रों का उत्पादक भी है।

अतः स्पश्ट है कि परिवहन एवं संचाार के साधन किसी भी देष की राश्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाऍं हैं।